वेदान्त का द्वैत–अद्वैत

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

वेदान्त शब्द का अर्थ है– वेद का अन्त। वेदान्त का अर्थ वेद का मन्तव्य, वेद का प्रतिपाद्य सिद्धान्त बताया गया है। सदानन्द मुनि ने तो वेदान्तो नामोपनिषद् प्रमाणम् इस प्रकार वेदान्त की परिभाषा की है। वेदान्त शब्द का अर्थ वेद की अन्तिम कड़ी उपनिषदों से लिया जाता है। वेदों का सार ही उपनिषदों का विषय है। उपनिषदों में सर्वत्र आत्मा–ब्रह्म पर ही विचार किया है। उपनिषदों के ब्रह्म, आत्म–सम्बन्धी वर्णन के आधार पर आगे चलकर जिस दार्शनिक परम्परा का विकास हुआ, वही आगे चलकर वेदान्त नाम से अभिहित की जाने लगी। इस प्रकार वेदान्त शब्द किसी दर्शन सम्प्रदाय नाम का द्योतक नहीं है, अपितु सत्य के लिए प्रयुक्त अन्तिम शब्द है। वेदान्त का सम्पूर्ण कलेवर ही उपनिषद् है। उपनिषदों में जो सिद्धान्त यत्र–तत्र असम्बद्ध अवस्था में उपलब्ध हैं, तर्क की कसौटी पर जो कसे नहीं गये, उन्हीं सिद्धान्तों को वेदान्त में सुसम्बद्ध क्रम में तथा तर्क की कसौटी पर कसा गया है। वेदान्त में द्वैत, अद्वैत, द्वैताद्वैत, विशिष्टाद्वैत आदि का वर्णन है।

द्वैत का अर्थ है– इस संसार में दो प्रमुख तत्व हैं जड़ और चेतन। अद्वैत का अर्थ है– केवल एक ही तत्व है, जो कुछ दिखाई देता है, वह भ्रम है। इस प्रकार आचार्यों ने उपनिषदों को आधार मानकर अनेक प्रकार की व्याख्याएं प्रस्तुत की हैं। वेदान्त दर्शन का परिचायक सर्वप्रथम ग्रन्थ है–'वेदान्तसूत्र'। इसका दूसरा नाम ब्रह्मसूत्र भी है। कारण कि इसका प्रधान विषय ब्रह्म का वर्णन है। वेदान्त सूत्रों का अधिष्ठान उपनिषद् है। इसमें उपनिषदों में आये कथनों में एकरसता लाने का प्रयत्न किया गया है।

उपनिषद् का परम उद्देश्य ब्रह्म का ज्ञान कराना ही है। उपनिषद् में ज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि मन के सहित जब पांचों ज्ञानेन्द्रियां स्थिर हो जाती है और बुद्धि चेष्टारहित हो जाती है तब वह योग ही परम गति है। आत्मा ही एक ऐसा शाश्वत तत्त्व है जिसके आधार पर मानव अपने अस्तित्त्व को सिद्ध करता है। उपनिषदों में जिस अध्यात्म विद्या का वर्णन है उसका सम्बन्ध आत्मा से ही है। संसार के त्रिविधतापों और विविध शूलों से बचने का यही एक परम साधन है कि जीव मानव जन्म में दक्षता के साथ साधन परायण होकर अपने जीवन को सदा के लिये सार्थक कर ले। मनुष्य जन्म के सिवा और जितनी योनियां हैं, सभी केवल कर्मों का फल भोगने के लिये ही मिलती हैं। इस उपनिषद् वचन के अनुसार मानव जीवन का परम लक्ष्य आत्मामृत की प्राप्ति ही है। आत्मा दो प्रकार की है, एक जीवात्मा दूसरी परमात्मा। परमात्मा या ईश्वर सर्वज्ञ है, और एक है। जीवात्मा प्रत्येक शरीर में भिन्न–भिन्न व्यापक और नित्य है।

वेदान्त के अनुसार आत्मा नित्य शुद्ध–बुद्ध मुक्त है। वह सच्चिदानन्द बताया गया है। वेदान्त दर्शन का यही मूल है।

उपनिषदों में जगत् का आदि और अन्त ब्रह्म को माना गया है। अतः ब्रह्म ही परमतत्त्व है। इसे ही आत्मतत्त्व भी कहते हैं। उपनिषदों में ब्रह्म के दो रूप माने गये हैं––मूर्त्त और अमूर्त्त, मर्त्य और अमृत, स्थित और चर तथा सत् और त्यत्। ब्रह्म के विषय में सविशेष श्रुतियां और निर्विशेष श्रुतियां दोनों उपलब्ध हैं। ब्रह्म को सविशेष सगुण भी कहा गया है और निर्विशेष निर्गुण भी। सगुण ब्रह्म को 'अपर' ब्रह्म और निर्गुण ब्रह्म को पर ब्रह्म कहा गया है। अपर रूप में ब्रह्म सविशेष, सगुण, सप्रपंच, सविकल्प और सोपाधिक है तथा पर रूप में ब्रह्म निर्विशेष, निर्गुण निष्प्रपञ्च, निर्विकल्पक और निरूपाधिक है। अपर ब्रह्म की संज्ञा ईश्वर भी है जो समस्त विश्व का कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता और नियन्ता है। ये ही सर्वज्ञ और सर्वअन्तर्यामी हैं। ये ही सम्पूर्ण जगत् के कारण हैं, क्योंकि सभी प्राणियों की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय के स्थान ये ही है।

उपनिषदों में सगुण ब्रह्म के दोनों लक्षण उपलब्ध हैं। ब्रह्म अशब्द, अस्पर्श, अरूप, अव्यय, अरस, अगन्ध, अनादि और अनन्त है। उपनिषदों में निर्गुण ब्रह्म का वर्णन नेति–नेति रूप में दिया गया है। इसका तात्पर्य यह है कि ब्रह्म अलक्षण और अनिर्वाच्य है। शब्दों के द्वारा उसका निर्वचन नहीं किया जा सकता। ब्रह्म को वाणी से अनुपास्य बतलाया गया है। जो वाणी से प्रकाशित नहीं होता, किन्तु जिससे वाणी प्रकाशित होती है। जो मन से मनन नहीं किया जा सकता, किन्तु जिससे मन मनन करता है। जो चक्षु आदि इन्द्रियों से सर्वथा अतीत है। उसके विषय में केवल इतना ही कहा जा सकता है कि जिसकी शक्ति और प्रेरणा से चक्षु आदि इन्द्रियां अपने–अपने विषयों को प्रत्यक्ष करती है वह ब्रह्म है। यह उपनिषदों का प्रतिपाद्य है।

द्वैत से अद्वैत बनना हमारी सिद्धि है हमारा लक्ष्य है अद्वैत को प्राप्त करना। जहां द्वैत है वहां भेद है। शरीर और आत्मा में द्वैत है, इसलिए शरीर और आत्मा भिन्न–भिन्न है। संसार में जितने भी प्राणी है उन सभी में आत्मा है और सभी की आत्मा समान है। आत्मा में कोई भेद नहीं है। सभी प्राणियों में केवल शरीर का भेद है। यह भेद कर्मों के कारण है। आत्मा में कोई द्वैत नहीं है, वह अद्वैत स्वरूप है। आदर्श एक लक्ष्य है उसको प्राप्त करने का प्रयास होना चाहिए। आदर्शों को मन में रखकर जो आगे बढ़ता है वह लक्षित मंजिल को प्राप्त कर लेता है। जीवन में सर्वत्र द्वैत का दर्शन होता है। द्वैत से अद्वैत की ओर जाने की प्रक्रिया पूर्णता की प्रक्रिया है। द्वैत साधन है और अद्वैत हमारा लक्ष्य।